सुल्तान तो केवल नाम का शासक था। बलबन ने छोटे छोटे तुर्कों को अधिक महत्व का पद देकर चालीसियों के समान बना दिया। जब चालीसियों का कोई भूल करता तो उसको बहुत कड़ा दंड दिया जाता था जैसे ! अवध के प्रांतपति हैबत खाँ ने मदिरा पीकर एक व्यक्ति की हत्या कर दी तो बलबन ने उसे 500 कोड़े मारने की सजा दी तथा उसके शरीर को मृत विधवा की मर्जी पर छोड़ दिया गया। इसके अलावा भी अवध, बदायूं आदि में भी कुछ इस तरह की घटनाएं हुई। इस प्रकार बलबन ने चालीसियों को संहार करने में पूरी सफलता प्राप्त की।

गुप्तचर विभाग की व्यवस्था :-

गुप्तचरों की अच्छी व्यवस्था भी सफल शासन संचालन के लिए अत्यंत आवश्यक होता है। बलबन की गुप्तचर व्यवस्था बहुत ही अच्छी थी। हर एक विभाग में गुप्त संवाददाता होते थे। हर एक प्रांत और हर एक जिला में गुप्त समाचार लिखने वालों की नियुक्त किया जाता था। गुप्तचरों को बहुत अच्छा वेतन भी मिलता था। गुप्तचर विभाग प्रांतपतियों के नियंत्रण से मुक्त था। गुप्तचरों को ठीक से कर्तव्य पालन नहीं करने पर उनको कठोर दंड दिया जाता था। अतः गुप्तचर विभाग भी बलबन के शासन को सुदृढ़ बनाने में काफी सहायक रहा।

सेना का प्रबंध :-

बलबन ने इमाद-उल-मुल्क को सेना का प्रबंधक बनाया। उसे दिवान का पद मिला, उसने सेना की भर्ती वेतन और वस्तुओं के विषयों का प्रबंध संभालने में खूब रुची दिखलायी। वह एक कुशल अधिकारी सिद्ध हुआ। फलतः सेना में कठोर अनुशासन आ गया, जिससे शासन संचालन सुचारु रूप से होने लगा।

अंत में यह कहा जा सकता है कि बलबन ने दिल्ली सल्तनत को सुदृढ़ता प्रदान करने में पूर्ण सफलता प्राप्त की लेकिन अपने वंशज को सुदृढ़ बनाने में असफल रहा। इसका मुख्य कारण था - बलबन की व्यवस्था उसके अपने व्यक्तित्व पर आधारित थी। उसने सल्तान की सत्ता को सर्वोपरि बनाने के प्रयास में सामंत वर्ग को निःशक्त बनाये रखा। यह कमजोर सामंत वर्ग सुल्तान की छत्रछाया से बाहर रहकर कुछ करने को सक्षम नहीं था। अतः कैकुबाद और कैयुमर्स जैसे शासकों के अधीन राज्यव्यवस्था बिखरने लगी। खल्जी सामंतों के प्रभाव में वृद्धि के कारण इल्बारी सामंत वर्ग की शक्ति घटने लगी। यही कारण था कि बलबन की मृत्यु के बाद उसके वंश का ही नहीं बल्कि इल्बरी शासक वर्ग के प्रभुत्व का भी अंत हो गया।